प्रथम परिच्छेद

1.1 विषय-उपस्थापन

I. जीवन में संगीत का महत्व

II. संगीत का उद्देश्य

III. शोध विषय का उद्देश्य

IV. विषय का परिसीमन

- क शोध की विधि
- ख तथ्य सामग्री संकलन की प्रविधियां
- ग शोध का क्षेत्र

V. सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण

1.2 शोध-एक अध्ययन

- I शोध के प्रेरक तत्व
- II शोध की विधियां
- III संगीत में शोध का महत्व
- IV संगीत में शोध की आवश्यकता

प्रथम परिच्छेद

विषय-उपस्थापन

संगीत अनादि और अनन्त है । ठीक उसी प्रकार जैसे कि कोई यह नहीं बता सकता कि जन्म-मरण की प्रक्रिया कहां से प्रारम्भ हुई तथा कब तक चलती रहेगी ।

संगीत मानव की आत्मा की सजीव झांकी है । मानव, संगीत की साधना अनादिकाल से करता आया है । संगीत मानव मन की सुख, दुःख, प्रेम, वात्सल्य, करूणा आदि सभी प्रकार की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है । संगीत मानव जीवन का अभिन्न अंग है जिसके अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

सृष्टि की रचना संगीत के आधार पर हुई । प्रकृति के कण-कण में लयात्मक संगीत व्याप्त है इसलिए जब तक संगीतमय ध्वनि गूंजती है जीवन क्रम चलता है । संगीतमय ध्वनि के बंद होते ही जीवन का अन्त हो जाता है । मानव, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु सभी में संगीत का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है । ब्रह्माण्ड के कण-कण में संगीत समाया है । सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी सब एक निश्चित लय में घूमते हैं, कहीं तनिक सा भी अन्तर होने पर ब्रह्माण्ड में भी मन्वान्तर आ जाता है । पेड़ों का हिलना, हवा का सरसराना, नदियों की कल-कल पशु-पक्षियों का मधुर-कलरव, सब में संगीत व्याप्त है ।

जीवन में संगीत का महत्त्व

संगीत संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है । वास्तव में हमारी संस्कृति में जो एकात्मता है वह इन कलाओं से प्राप्त हुई है । मधुर संगीत का हमारे हृदय और कर्णेन्द्रिय पर ऐसा प्रभाव पड़ता है कि चाहे जहां से भी ध्वनि आती हो वह हमें आकर्षित करती है ।

संगीत का स्थान मानव के व्यक्तिगत जीवन में भी उतना ही है जितना सामाजिक जीवन में, जन्म से लेकर मरण पर्यन्त संगीत किसी न किसी रूप में मानव के साथ चलता है । संगीत हमारे मनोभावों को उन्नति की ओर अग्रसर करता है, इसलिए संगीत का हमारे शारीरिक और मानसिक अंगों और इन्द्रियों से गहरा सम्बन्ध है । संगीत मनुष्यों को उनके सदगुणों की याद दिलाकर उन्हें उन्नति की ओर अग्रसर होने को उत्साहित करता है संगीत मनुष्य के चरित्र को अधिक स्थिर और संतुलित बनाता है । सामूहिक गायन से जहां आपस में मैत्री भाव का

विकास होता है, व्यक्तिगत कलात्मक प्रदर्शन द्वारा संगीतज्ञ में आत्मविश्वास व एकाग्रता का गुण आता है । मानव की जिह्वा झूठ बोल सकती है परन्तु हृदय से निकले भाव सत्य होते हैं । संगीत की महत्ता अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि नाट्यकार शेक्सपियर ने कितने सुन्दर ढंग से की है ।

"जिनके हृदय में संगीत निवास नहीं करता वह द्रोह, कपट और तदनुषिक दोषों का पात्र है । उसकी आत्मा की स्थिति तमोमय है, उसकी आसक्ति व ममता भी सच्ची नहीं है । ऐसे मनुष्य पर विश्वास नहीं करना चाहिए ।"[1]

संगीत का उद्देश्य

संगीत की सबसे बड़ी शक्ति है मानव को सच्चे अर्थों में मानव बनाना, मानव की आसुरी वृत्तियों का परिमार्जन कर उसमें दैवी गुणों का संचार करना । मानव को सच्चा मनुष्य बनाने की शक्ति न तो विज्ञान में है न ही अर्थशास्त्र में और न ही किसी अन्य विद्या में । एकमात्र संगीत ही ऐसी मानवीय कला है जो मानव मन में निर्ममता के स्थान में ममता, कटुता के स्थान पर कोमलता, घृणा के स्थान पर स्नेहिल आर्कषण, भावहीनता के स्थान पर भावुकता की सरिता प्रवाह कर सकती है । आज जबकि मानव स्वार्थ की चरम सीमा को पार कर चुका है केवल संगीत ही ऐसी रसधारा है जो मानव मन की कलुषता को धोने तथा उसे सहानुभूति, भाईचारे और सहृदयता के अमृत कुण्ड में आप्लावित कर सकती है । कठोर तथा कर्कश ध्वनियां जहां हमारे मस्तिष्क को विकृत कर देती हैं वहीं संगीतमय स्वरलहरियां हमारे मन में स्फूर्ति एवं उत्साह का संचार करती है ।

शोध विषय का उद्देश्य

शोध विषय शोधकार्य का आधार या बीज होता है । जिस प्रकार बीज अंकुरित, पल्लवित और सुमनित होकर फलित होता है, उसी प्रकार शोध विषय अनेक अध्यायों में बढ़ता और फैलता है । विषय के बिना कुछ कहना या लिखना संभव नहीं है । शोध का विषय शोधार्थी के चिंतन, मनन या लेखन की आधार-भूमि होता है ।

कोई भी ज्ञान प्राप्त करने के लिए उस विषय से सम्बन्धित पूर्ण जानकारी का होना आवश्यक है क्योंकि शोध का परिणाम एक ओर विषय का अध्ययन, मनन तथा उच्चानुशीलन है

---

1. संगीत शिक्षण एस. भटनागर पृष्ठ 13

वहीं दूसरी ओर शोध ज्ञान का निरन्तर जीवन्त होने का प्रमाण है । जब भी कोई बात कही जाती है तो वह बात केवल नई नहीं होती है बल्कि उस बात को कहने का ढंग नया होता है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''संगीत में शोध की प्रवृत्ति-एक अनुशीलन'' में शोध की बढ़ रही प्रवृत्ति के कारणों को उजागर करने की चेष्टा है । शैक्षिक शोध का प्रत्यय भारतवर्ष में नया नहीं है, किन्तु पिछले कई सौ वर्ष तक देश में राजनैतिक, सामाजिक और शैक्षिक उथल-पुथल के कारण गम्भीर अध्ययन की परम्परा लगभग थम सी गई थी, जो बीसवीं शताब्दी से पुनः प्रारम्भ होता दिखता है । अतः ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में शोध का महत्व बढ़ रहा है । इसका मुख्य कारण प्रत्येक युग में नए तथ्य तथा नई विचारधारा का आविष्कार होना है । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोध की प्रवृत्ति के निरन्तर बढ़ने के कारणों की तलाश की गई है । इनमें ज्ञान भण्डार में वृद्धि, डिग्री का महत्व, उच्च कक्षाओं में अध्यापन के लिए अनिवार्यता, उच्च पद की प्राप्ति, नवीन वेतनमान व वेतनवृद्धि इत्यादि मुख्य हैं जिन पर अध्ययन के दौरान प्रकाश डाला जाएगा । संगीत में शोध की निरन्तर बढ़ रही प्रवृत्ति के कारणों को जानना शोध प्रबन्ध का उद्देश्य है । प्रायः शोधकर्त्ताओं से वार्तालाप करने पर ऐसा अनुभव होता है कि शोध करते समय शोधकर्त्ताओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इन्हीं समस्याओं के कारण संगीत में शोध की प्रवृत्ति जटिल हो जाती है । विकलांगों, सामान्य व्यक्तियों व सांगीतिक परिवेश में पले व्यक्तियों की समस्याएं अलग-अलग होती हैं । इन सभी समस्याओं को भी दर्शाना शोध विषय का उद्देश्य रहेगा ।

विषय का परिसीमन

विषय की गहराई एवं विशालता के कारण शोधकार्य भारत के उत्तरी क्षेत्र के कुछ भागों के शोधार्थियों तक ही सीमित रखा गया है ।

i. शोध की विधि

शोध की विधि, शोध क्रिया को परिचालित करने का वह ढंग है जिसको समस्या की प्रकृति के आधार पर निर्धारित किया जाता है । शोध विषय सर्वेक्षणात्मक अध्ययन से सम्बन्धित होने के कारण शोध में वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

सर्वेक्षण विधि वर्तमान व उन प्रयत्नों से सम्बन्धित है जो शोध के अन्तर्गत घटना एवं तथ्य की स्थिति को निर्धारित करती है । समस्या के समाधान हेतु सभी सर्वेक्षण करते हैं । इस विधि के अन्तर्गत प्रश्नावली व साक्षात्कार उपकरणों का प्रयोग किया गया है ।

वर्णनात्मक शोध अथवा सर्वेक्षणात्मक शोध का शिक्षा-शोध के क्षेत्र में सबसे अधिक महत्व होने के कारण यह बड़े व्यापक रूप में व्यवहार में आया है ।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार, वर्णनात्मक अनुसंधान क्या है, का वर्णन एवं विश्लेषण करता है । परिस्थितियां अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू है, विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियां जो पायी जा रही हैं, प्रक्रियाएं जो चल रही हैं, अनुभव जो किये जा रहे हैं अथवा नई दिशाएं जो विकसित हो रही हैं, उन्हीं से इसका सम्बन्ध है ।[1]

वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षणात्मक शोध के अन्तर्गत एक ही समय में बहुत सारे लोगों के बारे में आंकड़े प्राप्त किये जाते हैं तथा इसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर पूरी जनसंख्या अथवा उसके न्यादर्श से होता है ।

मानव ऐसा प्राणी है जो शताब्दियों से संचित ज्ञान का लाभ उठा सकता है । वास्तव में समस्त ज्ञान, पुस्तकों तथा पुस्तकालयों में व ऐसी ही अन्य सामग्री तथा स्थानों से उपलब्ध होता है अतः पुस्तकालय से सम्बन्धित सुविधाओं का लाभ इस शोधकार्य के लिए उठाया गया है ।

ii. तथ्य सामग्री संकलन की प्रविधियां

किसी भी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन तथा अज्ञात दत्तों को संकलित करने के लिए अनेक विधियों के साथ-साथ उपकरणों अथवा यंत्रों की आवश्यकता होती है । इन्हीं यन्त्रों अथवा उपकरणों को प्रविधियां कहते हैं । सफल अनुसंधान के लिए उपयुक्त प्रविधियों के चयन का अत्यधिक महत्व है । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में तथ्यों को एकत्रित करने के लिए प्राथमिक तथ्य सामग्री के अन्तर्गत प्रत्यक्ष स्रोत साक्षाप्कार व अप्रत्यक्ष स्रोत प्रश्नावली द्वारा दत्तों को एकत्रित किया गया है । प्रश्नावली में साक्षात्कार प्रणाली व डाक द्वारा भेजकर प्रश्नावलियों के उत्तर वस्तुनिष्ठ तथा व्यक्तिनिष्ठ दो प्रकार के प्रश्नों द्वारा प्राप्त किए गए हैं । साक्षात्कार सर्वेक्षण विधि में तथ्य संकलन के लिए यांत्रिक साधन टेपरिकार्डर के द्वारा सामग्री को एकत्रित किया गया है ।

---

1 अनुसंधान परिचय डॉ. पारसनाथ राय,पृ॰ सं॰ 127

iii. शोध का क्षेत्र

सर्वेक्षणात्मक शोध में आंकड़े संग्रह करने हेतु इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाता है कि किस प्रकार की जनसंख्या से आंकड़े लिए जाएं, अतः इसे निश्चित करना सर्वप्रथम कार्य होता है ।

नर्तन की अपेक्षा संगीत में गायन, वादन पर शोधकार्य अधिक हो रहा है एवं हुआ है । अपने शोधकार्य को सुचारू रूप देने के लिए शोधार्थी (जो शोध कर चुके है व कर रहे हैं) को निम्न वर्गों में विभाजित किया गया है, जो इस प्रकार है :- (क) विकलांग वर्ग, (ख) सामान्य वर्ग, (ग) सांगीतिक परिवेश से सम्बन्धित वर्ग :- (अ) अनुवांशिक वर्ग (ब) सामान्य वर्ग

इनके द्वारा प्रश्नावली भरवाकर तथा साक्षात्कार द्वारा सामग्री को एकत्र किया गया है । शोधार्थी जो विषयानुसार वाद्य सम्बन्धी, नृत्य सम्बन्धी, साहित्यिक सम्बन्धी, लोक-संगीत सम्बन्धी, भक्ति संगीत सम्बन्धी, क्रियात्मक तथा संगीत शिक्षण सम्बन्धी आदि अलग-अलग विषयों पर शोध कर चुके हैं व कर रहे हैं या जिन शोधार्थियों की मौखिक परीक्षा शेष है तथा जिन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों से शोध किया है को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा है, चाहे वो समस्या पुस्तकों व पुस्तकालय सम्बन्धी हो, लोक संस्कृति में विविधता के कारण आने वाली समस्या हो, क्षेत्र सम्बन्धी समस्या, आपसी मतभेद सम्बन्धी, निर्देशक व निर्देशन सम्बन्धी, दत्तों को एकत्रित करने सम्बन्धी तथा विश्लेषण सम्बन्धी आदि समस्याओं से सम्बन्धित हो सभी को न्यूनाधिक ऐसी ही समस्याओं से जूझना पड़ा है ।

शोध एक उद्देश्यपूर्ण कार्य है । अतः विशिष्ट समस्याओं के समाधान हेतु शोधकार्य किया जाता है । कुशलतापूर्वक तथा क्रमबद्ध तरीके से तथ्यों का उचित संग्रहण एवं प्राप्त परिणामों का आंकलन शोध कहलाता है । शोधार्थी का विश्वास है कि यह शोधकार्य आगे आने वाले शोधकर्त्ताओं की समस्याओं को हल करने में सार्थक सिद्ध होगा ।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

शोध विषय सर्वेक्षणात्मक होने के कारण जिन पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया है उनमें संगीत पत्रिका सन् 1966 से लेकर अब तक का अध्ययन किया गया है । इसके अतिरिक्त जून 1988 में डॉ. सुभद्रा चौधरी द्वारा लिखित "संगीत अनुसंधान की समस्याएं और क्षेत्र", डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती द्वारा लिखित, "स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का

योगदान" तथा "Music – Its Methods and Techniques of Teaching in Higher Education", आर. ए. शर्मा द्वारा लिखित "शिक्षा अनुसंधान", डॉ. वी. एम. जैन द्वारा लिखित रिसर्च मैथडोलॉजी", एस. पी. सुखिया, पी. वी. मेहरोत्रा, आर. एन. मेहरोत्रा द्वारा लिखित " शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व", पारसनाथ राय द्वारा लिखित "अनुसंधान परिचय", एस. भटनागर द्वारा लिखित "संगीत शिक्षण" डॉ. मनोरमा शर्मा द्वारा लिखित "संगीत एवं शोध प्रविधि", डॉ. विनय मोहन शर्मा द्वारा लिखित " शोध परिधि", डॉ. पुरूदाधीच द्वारा लिखित "कत्थक नृत्य शिक्षा" तथा पंडित तीर्थराम, आजाद द्वारा लिखित "कत्थक दर्पण" आदि अन्य कई पुस्तकों का अध्ययन किया गया है । यह समस्त विषय सामग्री इस शोध विषय से आंशिक रूप से जुड़ी होने के कारण इस शोध कार्य के लिए उपयुक्त रही है ।

शोध-एक अध्ययन

शोध, ज्ञान की विभिन्न विधाओं के अध्ययन का आधार है । ज्ञान शोध की वस्तु है, अज्ञात को ज्ञात बनाना तथा ज्ञात को पुर्नविवेचन द्वारा स्पष्ट और व्यवस्थित करना ही शोधकार्य है । शोध का दायित्व ज्ञान की तह तक पहुंच कर ज्ञान के ज्ञात-अज्ञात तथ्यों के विश्लेषण से सिद्धान्त निर्धारित करना है ।

ज्ञान की प्रत्येक शाखा के अन्तर्गत "शोध" शब्द का प्रयोग होता है । खोज, अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा सभी शोध के ही पर्यायवाची शब्द हैं । अंग्रेजी में शोध को रिसर्च, मराठी में संशोधन कहा गया है । शोध एक ऐसी प्रक्रिया को दर्शाता है जिसके द्वारा अनेक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है और उन तथ्यों का विश्लेषण करके व्यापक निष्कर्ष निकाले जाते हैं ।

'क्या, कैसे, कब, कहां, क्यों शब्द शोध के प्राण हैं, क्योंकि शोध का लक्ष्य प्रगति के साथ-साथ श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करना भी है ।

शोध के प्रेरक तत्त्व

सभी चिन्तनात्मक क्षेत्रों में सन्देह, जिज्ञासा, असन्तुष्टि के भाव, किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के प्रथम चरण है । जब तक मानव मन में आश्चर्य, सन्देह, जिज्ञासा या असन्तुष्टि की भावना नहीं आएगी तब तक समस्याओं पर व्यक्ति का ध्यान नहीं जाएगा, अतः निम्न कारण शोध के प्रमुख प्रेरक तत्त्व हैं ।

1 जिज्ञासा

जिज्ञासा मानव मन का मौलिक गुण है । जिज्ञासु मानव की शक्ति असीमित है जब भी कोई समस्या मानव के मन में आती है तो समस्त शारीरिक एवं मानसिक शक्तियां उसके समाधान के लिए एकाग्र हो जाती हैं । यह जरूरी नहीं कि प्रत्येक मानव अपने प्रयास में सफल ही हो, लेकिन जिज्ञासा की ज्योति को वह प्रज्वलित कर जाता है और आगे आने वाली पीढ़ी उस समस्या को हल करने में लग जाती है ।

2 कारणों में पता लगाने की इच्छा

मनुष्य में कारणों का पता लगाने की तीव्र इच्छा होती है । यदि कोई घटना घटित होती है तो मनुष्य उन कारणों का पता लगाने की कोशिश में जुट जाता है । जिसके कारण उस घटना का जन्म हुआ वहीं तीव्र इच्छा शोध के लिए प्रेरक तत्त्व बनती है ।

3 सन्देह निवारण

जे लोग ज्ञान भण्डार में वस्तुतः वृद्धि के लिए शोध करते हैं, उनकी दृष्टि सामान्य लोगों की अपेक्षा विलक्षण होती है । खोजबीन के पश्चात् सन्देह का निवारण ही शोध का प्रेरक तत्त्व है ।

4 नवीन परिस्थितियां

मनुष्य को जीवन में कई प्रकार की परिस्थितियों से जूझना पड़ता है । यहीं से नवीन परिस्थितियां व नवीन घटनाएं, शोध की पृष्ठभूमि बन जाती है ।

5 तुलनात्मक विचारधारा

मनुष्य की प्रवृत्ति रही है कि वह नवीन व प्राचीन प्रणालियों की तुलना व नवीन प्रणालियों की खोज करता रहता है । मनुष्य की आवश्यकता ही नवीन समस्याओं और आधुनिक यंत्रों तथा साधनों की प्रगति की प्रेरणा का स्रोत बनते हैं ।

शोध की विधियां

'विधि' शोध क्रिया को परिचालित करने का ढंग है जो समस्या की प्रकृति के द्वारा निर्धारित होती है । विभिन्न प्रकार की समस्याओं की प्रकृति के ऊपर यह निर्भर करता है कि शोध कैसा होगा व शोध की विधि क्या होगी, क्योंकि ठीक विधि अपनाने से शोधार्थी अपने

शोधकार्य को ठीक दिशा दे पाता है । सामान्य रूप से शोध की विधियों को 'विधि' न कहकर 'शोध के प्रकार' कहें तो ज्यादा संगत होगा । प्रत्येक शोध एक विशेष प्रकृति की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है । यदि समस्या की प्रकृति ऐतिहासिक है तो इसे हम 'ऐतिहासिक शोध' कहेंगे । यदि समस्या की प्रकृति सर्वेक्षणात्मक अथवा वर्णनात्मक है तो 'सर्वेक्षणात्मक' अथवा 'वर्णनात्मक' शोध और यदि समस्या की प्रकृति प्रयोगात्मक है तो उसे 'प्रयोगत्मक' शोध कहेंगे । सामान्य रूप से अधिकांश विद्वान निम्नलिखित तीन वर्गीकरण को मानते हैं । यदि शोध भूतकाल से संम्बंधित है तो ऐतिहासिक, वर्तमान से संम्बंधित है तो 'सर्वेक्षणात्मक' और यदि भविष्य से संम्बंधित है तो 'प्रयोगात्मक' शोध होगा।

1 ऐतिहासिक शोध विधि

ऐतिहासिक शोध विधि का सम्बंध अतीतकाल से है और यह भविष्य को समझाने के लिए अतीत का विश्लेषण करता है।

2 सर्वेक्षणात्मक शोध विधि अथवा वर्णनात्मक शोध विधि

सर्वेक्षणात्मक शोध विधि अथवा वर्णनात्मक शोध विधि का सम्बंध मुख्यतः वर्तमान से होता है तथा इसके अर्न्तगत शोध के विषय का स्तर निर्धारित करने का प्रयास करते हैं।

3 प्रयोगात्मक शोध विधि

प्रयोगात्मक शोध विधि का उद्देश्य वैज्ञानिक रूप में दो या दो से अधिक तत्त्वों के सम्बन्ध की व्याख्या करना होता है ।

ऐतिहासिक शोध विधि

अतीत में जो कुछ विद्यमान था उसको खोजना, उसका वर्णन करना तथा उसकी व्याख्या करना ऐतिहासिक अध्ययनों का कार्य है। ऐतिहासिक शोध को जानने से पूर्व इतिहास का ज्ञान आवश्यक है।

मानव की उपलब्धि का पूर्ण, सही और अर्थपूर्ण अभिलेख इतिहास कहलाता है। ये केवल कुछ घटनाओं की सूची मात्र नही होता अपितु एक विशेष समय एंव स्थान पर घटित मानव-जीवन से सम्बंधित घटनाओं का एक सत्य, सुनियोजित एंव परीक्षित अभिलेख होता है। इस इतिहास का प्रयोग भूतकाल की पृष्ठभूमि में वर्तमान को समझाने एंव भविष्य के लिए

पूर्व-कथन करने के लिए, किया जाता है जिससे भविष्य के सम्बंध में उचित निर्णय करने में सरलता हो सके।

ऐतिहासिक सामग्री की विशेषता

ऐतिहासिक सामग्री की कुछ मूल विशेषताएँ है जो उसे अन्य प्रकार के ज्ञान से अलग करती है:-

1 इतिहास की विषय सामग्री अपरिवर्तनीय होती है, भूतकालीन घटनाओं को न तो प्रस्तुत कर सकते हैं और न ही उनमें परिवर्तन कर सकते हैं।

2 ऐतिहासिक आंकड़ों की एक विशेषता यह है कि ऐतिहासिक आँकड़े भूतकालीन घटनाओं के अभिलेख के रूप में ही मिलते हैं।

3 ऐतिहासिक शोधकर्त्ता को ऐतिहासिक आँकड़ों के विश्लेषण में बहुत ही सतर्क रहना पड़ता है, क्योंकि शोधकर्त्ता घटना का प्रत्यक्ष दर्शक नहीं होता है । निरीक्षण करने और रिपोर्ट देने वाला कोई और होने के कारण ऐतिहासिक आँकड़ों के विश्लेषण में व्यक्तिगत पक्षपात के लिए बहुत स्थान होता है।

4 ऐतिहासिक शोध में भूत के आधार पर वर्तमान का विश्लेषण करने का प्रयास किया जाता हैं।

ऐतिहासिक शोध विधि के मूल उद्देश्य

1. ऐतिहासिक शोध का मूल उदेश्य भूत के आधार पर वर्तमान को समझना एवं भविष्य के लिए सतर्क होना है ।

2. ऐतिहासिक शोध हमें यह बताता है कि आज नई कहीं जाने वाली वस्तुओं में नवीनता कहां तक है तथा बीच के परिवर्तनों के क्या प्रभाव पड़े हैं ।

3. भूतकालीन तथ्यों के प्रति जिज्ञासा की तृप्ति एवं भूत, वर्तमान तथा भविष्य का सम्बन्ध स्थापन भी ऐतिहासिक शोध का उद्देश्य है ।

4. ऐतिहासिक शोध उन परिस्थितियों, किन कारणों से व्यक्ति तथा व्यक्तियों ने एक विशेष व्यवहार किया है तथा उन परिस्थितियों, कालों का प्रभाव उसके व समाज पर क्या पड़ा, को स्पष्ट करता है ।

ऐतिहासिक शोध का कार्य अत्यन्त कठिन होने पर भी इसका क्षेत्र उतना ही व्यापक है जितना जीवन । ऐतिहासिक शोध गुप्त रहस्यों का उद्‌घाटन, अन्धविश्वासों एवं भ्रमों का निवारण करता है तथा ऐसे निरीक्षणों के प्रतिवेदन पर आधारित होता है जो समान घटनाएं घटित होने पर भी पुनः दोहराए नहीं जा सकते । इस विधि में दत्तों का संकलन प्रमुख एवं गौण स्रोतों के माध्यम से होता है ।

प्रमुख स्रोत

मौलिक अभिलेखों अथवा उन अवशेषों को जो किसी भी घटना एवं तथ्य के प्रत्यक्ष साक्षी होते हैं उन्हें प्रमुख स्रोत की संज्ञा दी जाती है । वे ऐतिहासिक शोध के आधारभूत दत्तों के स्रोत होते हैं, तथा इसके लिए ठोस एवं सबल आधार प्रस्तुत करते हैं । प्रमुख स्रोत दो प्रकार के होते हैं :-

1. प्राथमिक साधन

प्राथमिक साधन वे साधन हैं जो घटना, व्यक्ति या संस्था के विषय में प्रथम साक्षी का काम करते हैं । इस सफर के साधनों में निम्नलिखित बिन्दु महत्त्वपूर्ण हैं ।

क. सचेतन रूप से प्रदर्शित सूचनाएं

इसके अन्तर्गत निश्चित साधन में वृत्तान्त, कथा, जीवन वृत्तान्त, दैनन्दिनी, वंशावली व शिलालेख आदि आते हैं । मौखिक परम्परा के अन्तर्गत गाथाएं व कहानियां आती हैं व कलात्मक उपलब्धियों के अन्तर्गत ऐतिहासिक चित्र, मूर्तियां व सिक्के आते हैं ।

ख. अचेतन प्रमाण पत्र व अवशेष

इन साधनों के अन्तर्गत मानवीय अवशेष, भवन, अस्त-शस्त्र, वस्त्र एवं ललित कलाएं आदि आते हैं ।

2. माध्यमिक साधन

एक व्यक्ति जो ऐतिहासिक तथ्य के विषय में तत्कालीन घटना से सम्बन्धित व्यक्ति के मुख से सुने-सुनाये वर्णन को अपने शब्दों में व्यक्त करता है, ऐसे वर्णन को 'माध्यमिक साधन' कहते हैं । यद्यपि इसमे सत्य का अंश रहता है किन्तु प्रथम, साक्षी से द्वितीय श्रोता तक पहुंचते-पहुंचते वास्तविकता में कुछ परिवर्तन आ जाता है जिससे तथ्यों में दोष युक्त होने की सम्भावना रहती है ।

जिज्ञासु शोधकर्त्ता के लिए ऐतिहासिक साधन का विचित्र संसार होता है । सत्य की खोज के लिए उसे अनेक अकथित तथा अप्रकट तथ्यों से गुजरना पड़ता है । इन रहस्यों का उद्घाटन तथा तत्वों का विश्लेषण एवं अन्वेषण करना शोधकर्त्ता का मुख्य लक्ष्य होता है ।

सर्वेक्षणात्मक शोध अथवा वर्णनात्मक शोध विधि

किसी भी विषय के शोध में सर्वेक्षणात्मक अथवा वर्णनात्मक शोध सम्बंध विधि का सबसे अधिक महत्त्व है और शिक्षा के क्षेत्र में यह बड़े व्यापक रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं ।

डब्ल्यू वेस्ट के अनुसार वर्णनात्मक अनुसंधान, "क्या है" का वर्णन एवं विश्लेषण करता है । परिस्थितियों अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू है, विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृतियां जो पायी जा रही हैं, प्रक्रियाएं जो चल रही हैं, अनुभव जो किए जा रहे हैं अथवा नयी दिशाएं जो विकसित हो रही हैं, उन्हीं से इसका सम्बन्ध है ।[1]

सर्वेक्षणात्मक शोध के उद्देश्य

1. सर्वेक्षणात्मक शोध का उद्देश्य वर्तमान स्थिति का स्पष्टीकरण तथा भावी नियोजन अथवा परिवर्तन में सहायता करना है ।
2. भावी शोध के प्राथमिक अध्ययन में सहायता करना जिससे शोध को अधिक विश्वसनीय एवं वस्तुनिष्ठ बनाया जा सके ।
3. मानव व्यवहार के विभिन्न पक्षों की जानकारी प्राप्त करना भी सर्वेक्षणात्मक शोध का उद्देश्य है।

सर्वेक्षणात्मक शोध की विशेषताएं

1. सर्वेक्षणात्मक शोध के अन्तर्गत एक ही समय में बहुत सारे लोगों के बारे में आंकड़े प्राप्त किए जा सकते हैं ।
2. इसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति-विशेष से न होकर पूरी जनसंख्या अथवा उसके न्यादर्श से होता है ।

---

1 अनुसधान परिचय डॉ. पारस नाथ राय पृष्ठ 127

3. सर्वेक्षणात्मक शोध के निश्चित व विशिष्ट उद्देश्य होते हैं इस शोध के अन्तर्गत स्पष्ट परिभाषित समस्या पर कार्य करते हैं ।

4. सर्वेक्षणात्मक शोध के आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण में सावधानी रखनी पड़ती है ।

5. यह सरल एवं कठिन दोनों प्रकार का हो सकता है ।

आंकड़ों का संग्रह

सर्वेक्षणात्मक शोध में आंकड़े संग्रह करने में इस बात का ध्यान रखना होता है कि किस प्रकार की जनसंख्या से आंकड़े लिए जाने हैं, अतः सबसे पहले जनसंख्या का निश्चय करना होता है। जनसंख्या के अन्तर्गत व्यक्ति, पद, घटनाएं अथवा वस्तुएं हो सकती हैं । जनसंख्या का निश्चय करने के बाद यह निश्चय करना होता है कि (1) क्या आंकड़े सम्पूर्ण जनसंख्या से प्राप्त करने हैं? अथवा (2) आंकड़े न्यादर्श से प्राप्त करने हैं?

सर्वेक्षणात्मक शोध का प्रयोग शिक्षा, मनोविज्ञान तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों में बहुतायत के साथ होता है तथा इसका उद्देश्य वर्तमान सिद्धान्तों का मूल्याकंन करना है । सर्वेक्षणात्मक अथवा वर्णनात्मक शोध का आधार दीर्घ प्रतिनिध्यात्मक न्यादर्श है ।

सर्वेक्षणात्मक अथवा वर्णनात्मक शोध के प्रकार

'वान डैलेन के अनुसार सर्वेक्षणात्मक शोध वर्गीकरण निम्नवत् है ।[1]

1. सर्वेक्षण अध्ययन
2. अन्तर-सम्बन्धों का अध्ययन
3. विकासात्मक अध्ययन

सर्वेक्षण अध्ययन

समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षाशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, सरकार, उद्योगपति तथा राजनीतिक सभी सर्वेक्षण करते हैं। सर्वेक्षण सम्बन्धी आंकड़े संग्रह करने के तीन उद्देश्य होते हैं ।

1. वर्तमान स्तर का निर्धारण
2. वर्तमान स्तर और मान्य स्तर में तुलना
3. वर्तमान स्तर का विकास करना ।

सर्वेक्षण सम्बंधी अध्ययन का क्षेत्र तथा उसकी गहराई शोध विषय की समस्या की प्रकृति पर निर्भर करती है। उसके अनुरूप सर्वेक्षण विस्तृत अथवा संक्षिप्त हो सकता है। इसके अर्न्तगत

अनेक देशों अथवा एक देश, धर्म, शहर अथवा किसी इकाई को ले सकते हैं। आँकड़े प्रत्येक सदस्य से अथवा न्यादर्श से लिए जा सकते हैं। सर्वेक्षण अध्ययन अनेक प्रकार का हो सकता है, जिसमें मुख्य बिन्दु निम्नलिखित हैं।

1 विद्यालय- सर्वेक्षण 2. कार्य- विश्लेषण 3. प्रलेखी- विश्लेषण

4. जनमत- सर्वेक्षण 5. समुदाय- सर्वेक्षण

1. विद्यालय सर्वेक्षण

विद्यालय सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर अनेक प्रशासकीय, शैक्षिक, आर्थिक तथा पाठयक्रम सम्बधी सुधार किए जा सकते हैं। विद्यालय सर्वेक्षण के अर्न्तगत सूचनाएँ - (1) निरीक्षण, (2) प्रश्नावली, (3) साक्षात्कार, (4) मानक परीक्षण, (5) प्राप्तांक पत्र आदि उपकरणों द्वारा प्राप्त करते हैं ।

2. कार्य विश्लेषण

कार्य विश्लेषण के अन्तर्गत कार्य-पद्धति, कमजोरियों, अक्षमताओं तथा दोहरे प्रयास का पता लगाया जाता है व समान कार्य का समुचित वर्गीकरण किया जाता है । इसकी सूचनाओं के लिए प्रशासकीय, शैक्षिक एवं अशैक्षिक स्थिति का अध्ययन, कार्यकर्त्ताओं के सामान्य कर्त्तव्य और दायित्व का अध्ययन आवश्यक है ।

3. प्रलेखी विश्लेषण

प्रलेखी विश्लेषण शोधकर्त्ता के लिए आंकड़े प्राप्त करने की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं । प्रलेखी विश्लेषण अनेक प्रकार के हो सकते हैं, जैसे न्यायिक निर्णय, राज्य के नियम, विद्यालय समिति के निर्णय का विश्लेषण कर अपनी समस्या से सम्बन्धित बाते ज्ञात करना, प्रशासनीय अभिलेखों, लेखपत्रों, प्रतिवेदनों तथा समितियों के प्रतिवेदनों, वजट, आर्थिक अभिलेखों, स्वास्थ्य अभिलेखों की स्थिति को जानना तथा व्यक्तिगत प्रलेखों आदि का विश्लेषण । प्रलेखी विश्लेषण से विद्यालय तथा समाज की विशिष्ट अवस्थाओं तथा क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त होता है, विभिन्न देशों, राज्यों व क्षेत्रों में चल रही क्रियाओं में भिन्नता का ज्ञान होता है तथा व्यक्तियों की मनोवैज्ञानिक दशाओं, मूल्यों, रूचियों अभिवृत्तियों तथा पक्षपातों का ज्ञान प्राप्त होता है ।

---

1 अनुसधान परिचय डॉ. पारस नाथ राय पृष्ठ 132

4. जनमत-सर्वेक्षण

शैक्षिक, राजनीतिक, औद्योगिक तथा अन्य क्षेत्र के नेताओं को अनेक निर्णय करने पड़ते हैं । सुलझे हुए नेता अनुमान अथवा किसी दबाब में आकर निर्णय लेने के बदले जनमत को जानने का प्रयास करते हैं । जनमत सर्वेक्षण के उद्देश्य विभिन्न होते हैं तथा जनमत सर्वेक्षण के उपकरण प्रश्नावली और साक्षात्कार हैं ।

5. समुदाय सर्वेक्षण

समाज तथा शिक्षा से सम्बंधित गहन सम्बन्धों के कारण शिक्षा शास्त्री सामुदायिक परिस्थितियों के सम्बन्ध में आंकड़े प्राप्त करते हैं । समुदाय सर्वेक्षण को सामाजिक सर्वक्षण व क्षेत्रीय सर्वेक्षण भी कहते हैं । समुदाय सर्वेक्षण किस प्रकार का और कितनी गहनता का होगा, यह समस्या की प्रकृति, उपलब्ध समय, धन, सामाजिक सहभाग की इच्छा पर निर्भर होता है । समुदाय सर्वेक्षण मुख्य तीन प्रकार का हो सकता है (1) किसी विशेष अवस्था का सर्वेक्षण, (2) समाज के किसी विशेष अंग का सर्वेक्षण, (3) व्यापक सर्वेक्षण।

समुदाय सर्वेक्षण में शोधकर्त्ता प्रश्नावली, साक्षात्कार, प्रत्यक्ष निरीक्षण उपकरणों तथा साधनों को प्रयोग में लाता है । सर्वेक्षणात्मक अथवा वर्णनात्मक अध्ययन का प्रयोग शिक्षा, सामाजिक तथा मनोविज्ञान में बहुतायत होता है ।

प्रयोगात्मक शोध विधि

प्रयोगात्मक शोध विधि एक वैज्ञानिक विधि है । इसके अन्तर्गत शोधकर्त्ता सदैव कुछ न कुछ नई खोज करने का इच्छुक रहता है । यह एक उन्नत विधि है जिसके अन्तर्गत हम किसी सूक्ष्म समस्या का सूक्ष्मतर समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं ।

प्रयोगात्मक विधि की मुख्य विशेषता ये है कि प्रदत्तों के संकलन के सन्दर्भ में पक्षपात से पूर्णरूपेण मुक्त है । शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोगात्मक विधि द्वारा कक्षा में एक विषय में विभिन्न शिक्षण विधियों द्वारा शिक्षण किए जाने पर विधियों की प्रभावशीलता आदि ज्ञात की जाती है ।

प्रयोगात्मक विधि की कसौटी

प्रयोगात्मक विधि, वैज्ञानिक विधि है अतः इसकी कसौटी का आधार वस्तुनिष्ठता, सत्यापन क्षमता, निश्चयात्मकता और भविष्य कथन-क्षमता है । प्रयोगात्मक विधि में वस्तुनिष्ठता

का विशेष ध्यान रखा जाता है तथा इससे प्राप्त निष्कर्ष का उन्हीं परिस्थितियों में सत्यापन किया जा सकता है, प्राप्त निष्कर्षों में निश्चयात्मक होती है ।

1. वस्तुनिष्ठता

जब किसी स्थिति अथवा घटना का उसके स्वाभाविक रूप में निरीक्षण करते हैं तथा निरीक्षक की व्यक्तिगत रूचि का उस पर प्रभाव नहीं पड़ता तो उस निरीक्षण को वस्तुनिष्ठ कहते हैं । इसकी मुख्य कसौटी यह है कि सभी एक स्तर के देखने वाले समान निष्कर्ष पर पहुंचते हों ।

2. सत्यापन क्षमता

वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए सत्यापन क्षमता अत्यन्त आवश्यक है, किन्तु सत्यापन उन्हीं समान परिस्थितियों में होना चाहिए जिनमें मूल प्रयोग हुआ हो ।

3. निश्चयात्मकता

जो निश्चित नहीं है, उसका परिभाषीकरण एवं वर्गीकरण नहीं हो सकता न ही वैज्ञानिक अध्ययन भी सम्भव हैं । अतः प्राप्त निष्कर्षों का निश्चित होना, अध्ययन की समस्या की विभिन्न शब्दावली का स्पष्ट विवेचंन एवं परिभाषीकरण पर निर्भर है ।

4. भविष्य-कथन-क्षमता

सभी विज्ञान का उद्देश्य, घटनाओं अथवा परिस्थितियों का अध्ययन, भविष्य कथन तथा यथासम्भव नियन्त्रण करना होता है। अतः वैज्ञानिक शोध के आधार पर भविष्य कथन करते हैं । भविष्य कथन की सफलता प्रयोगात्मक परिस्थितियों की समानता तथा स्थिरता, दो तत्वों का सहसम्बंध आदि पर निर्भर करती है ।

यदि किसी प्रयोग द्वारा किसी समस्या का अर्थपूर्ण हल निकालना है तो उसे अपने में पूर्ण होना आवश्यक है । अतः प्रयोगात्मक विधि एक वैज्ञानिक शोध पद्धति है जिसके आधार पर एक बड़ी सीमा तक विश्वसनीय निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं ।

संगीत में शोध का महत्त्व

हमारे ऋषि-मुनियों ने प्राचीन काल से ही प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को जानने का प्रयत्न किया व प्राचीन तत्ववेत्ताओं ने विभिन्न तत्वों का विश्लेषण कर मानव जीवन के साथ इन रहस्यों

के सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया । परिणामस्वरूप कई कलाओं और विद्याओं का जन्म हुआ ।

मानव जीवन के विकास के साथ संगीत का भी विकास हुआ, अतः मानव जीवन पर संगीत का प्रभाव होना स्वाभाविक था। मनुष्य किसी न किसी रूप से संगीत से अवश्य जुड़ा है । हमारे पूर्वज जहां ईश्वर की उपासना के लिए संगीत का प्रयोग करते थे दूसरी ओर लोकरंजन भी भारतीय संगीत की धारा बनी ।

"जीवन रूपी ग्रंथ के पृष्ठों को कहीं से भी पलट कर देखने पर कोई भी पृष्ठ ऐसा नहीं मिलता जिसे संगीत से शून्य कह दिया जाए ।"[1] अतः संगीत में शोध के महत्त्व को जानते हुए शोध का मुख्य उद्देश्य विभिन्न विधियों द्वारा विशिष्ट समस्याओं का समाधान प्राप्त कर अपनी लुप्त संस्कृति को जागृत व संरक्षण प्रदान करना है । मनुष्य अन्य प्राणियों से इसलिए भिन्न है क्योंकि मनुष्यों में अपने अनुभवों को सुरक्षित रखने तथा अपनी भावी पीढ़ी तक अपने अनुभवों को पहुंचाने की क्षमता है । मनुष्य अन्य प्राणियों की भांति हर पीढ़ी में अपने ज्ञान को नये सिरे से प्रारम्भ नहीं करता बल्कि अपने अर्जित ज्ञान को आगे बढ़ाता है और इसी अर्जित ज्ञान के कारण उसकी बौद्धिक शक्ति में भी वृद्धि होती है ।

मनुष्य जन्म-मरण की प्रक्रिया में फंसा हुआ है लेकिन ज्ञान के क्षेत्र में मनुष्य निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है । इस प्रगति का मूल कारण उसकी जिज्ञासा है जो नित्य नवीन शोध के विषय को जन्म देती है । आज संगीत के क्षेत्र में हो रहे शोधों तथा प्रयोगों पर दृष्टि डालने की आवश्यकता है । संगीत में शोध का महत्त्व, प्रगति के लिए उतना ही आवश्यक व अपरिहार्य है जितना कि जीवन की अन्य किसी प्रगति के लिए ।

संगीत में शोध की आवश्यकता

किसी भी विषय को जीवित रखना हो तो उससे पूर्व की गई त्रुटियों को दूर करके लोगों के अभ्यास से प्राप्त उपलब्धियों तथा अन्य व्यक्तियों के अनुभवों का लाभ उठाना वांछनीय है । सत्य सूचनाओं को एकत्रित कर तर्कसंगत विश्लेषण द्वारा सुनियोजित प्रश्नों के उत्तरों को प्राप्त करना ही शोध है । यही शोध मानव को प्रगति की ओर ले जाने में एक आवश्यक तथा शक्तिशाली उपकरण सिद्ध हुआ है । विश्व की सारी प्रगति विभिन्न क्षेत्रों में किए गए शोध के

1 डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती जी के विचार

कारण ही है । आज प्रत्येक क्षेत्र में इस बात को अनुभव किया जा रहा है कि यदि ज्ञान के विशिष्ट क्षेत्र को समझना है और प्रगति की होड़ में आगे बढ़ना है तो उसका एकमात्र साधन शोध ही है । संगीत में शोध की आवश्यकता निम्न कारणों से है ।

1. ज्ञान के विकास में सहायक

शोध ज्ञान के किसी विशेष परिधि का विस्तृत, सम्पूर्ण एवं नवीन चित्र प्रस्तुत करता है जिसके द्वारा ज्ञान कोष में वृद्धि और विकास होता है ।

2. उद्देश्य की प्राप्ति हेतु

शोध उद्देश्यपूर्ण क्रिया होने के कारण उद्देश्य प्राप्ति हेतु सर्वोत्तम साधन प्रदान करता है । शोध की समूची क्रिया उसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहती है जिसकी प्राप्ति हमारा उद्देश्य होता है ।

3. नवीन ज्ञान एवं गति प्रदान का स्रोत

मानव समाज परम्पराओं तथा रूढ़िवादी विचारों से घिरा हुआ है, शोध मानव समाज के मंद गति परिवर्तन में नवीन ज्ञान एवं गति प्रदान करने वाला प्रमुख स्रोत है तथा शोध रूढ़िगत विचारों एवं व्यवहारों में सुधार का मार्ग भी प्रस्तुत करने में सहायक होता है ।

4. खोज की जिज्ञासा को शान्त करता है

शोध सदैव सत्य ज्ञान की प्राप्ति में किया गया एक प्रयास है अतः शोध उत्सुकता को शान्त एवं सत्य की खोज की पिपासा को संतुष्ट करता है ।

5. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भावना के विकास में सहायक

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भावना के विकास में संगीत का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । शोध के अन्तर्गत लोक-हितकारी भावनाओं का समन्वय होता है । इसी कारण संगीत में शोध की आवश्यकता है ताकि संगीत में शोध के माध्यम से राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया जा सके साथ ही अपने पड़ोसी व अन्य देशों के संगीत से परिचित होकर कला की उन्नति में अपना योगदान कर सकें ।

अतः शोध वह अनोखी प्रक्रिया है जिसके द्वारा ज्ञान के प्रकाश तथा प्रसार के लिए सुव्यवस्थित प्रयास होता है । इसी कारण शोध संगीत के क्षेत्र में भी लागू होता है । वर्तमान

शताब्दी में संगीत की धाराओं ने नए मोड़ लिए हैं, जिनके कारण संगीत का लोकव्यापी प्रचार हुआ है। केवल शोध ही ऐसा माध्यम है जो अज्ञात को प्रकाशित करके मानव समाज की आकांक्षाओं, संभावनाओं और भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करता है तथा उसे उन्नति के प्रखर शिखर पर पहुंचाता है ।

द्वितीय परिच्छेद

2.1 संगीत में शोध की प्रवृत्ति के कारण

i ज्ञान भण्डार में वृद्धि

ii डिग्री का महत्व

iii उच्च कक्षाओं में अध्यापन के लिए अनिवार्यता

iv उच्च पद प्राप्ति हेतु

v नवीन वेतनमान व वेतनवृद्धि

vi नौकरी हेतु

2.2 संगीत में शोध के क्षेत्र

I वाद्य सम्बंधित शोध के क्षेत्र

II नृत्य सम्बंधित शोध के क्षेत्र

III लोक संगीत सम्बंधित शोध के क्षेत्र

IV बाल संगीत से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

V साहित्य-संगीत से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

VI व्यक्तित्व से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

VII भक्ति संगीत से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

VIII इतिहास से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

IX देश की एकता व विकास से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

X संगीत-शिक्षण से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

XI संगीत तथा अन्य ललित कलाओं से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

XII संगीत-चिकित्सा से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

XIII क्रियात्मक व सैद्धांतिक संगीत से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

XIV रवीन्द्र संगीत से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

XV संगीत संस्थाओं से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

XVI संगीत तथा योग से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

XVII गुरूमत संगीत से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

XVIII घरानों से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

XIX विश्व-संगीत से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

XX उत्तरी तथा दक्षिणी पद्धतियों से सम्बन्धित शोध के क्षेत्र

XXI पाश्चात्य-संगीत से सम्बंधित शोध के क्षेत्र

XXII चित्रपट संगीत से सम्बंधित शोध के क्षेत्र